Dr. RANJEET KUMAR
Deptt. of History
H. D. Jain College, Ara.

Notes for M.A. sem-III, CC-13, Unit-2

Topic:- Gandhian Ideology And movements
(गाँधीवादी विचारधारा और आंदोलन):-

मोहनदास करमचन्द्र गाँधी (1869-1948) (इसके बाद गाँधी जी) निःसंदेह हमारे समय में भारत की प्रज्ञा और संस्कृति के सबसे अधिक विश्वसनीय और प्रतिष्ठित प्रतिनिधि थे। उन्हें देशवासी सम्मानपूर्वक महात्मा के नाम से सम्बोधित करते थे। महान पुरुषों में बहुतों के लिए गाँधी जी महान थे। वे समाजसुधारक, अर्थशास्त्री, राजनीतिज्ञ, दार्शनिक और सत्य के जिज्ञासु थे। हम उन्हें ऐसे युग पुरुष के रूप में मानते हैं, जिन्होंने नए युग का शुभारंभ किया।

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के लिए मोहनदास करमचन्द्र गाँधी का योगदान अद्वितीय था। उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को जनता की कांग्रेस और राष्ट्रीय आंदोलन को जन आंदोलन बनाया। उन्होंने लोगों को निर्भय और साहसी बनाया तथा अन्याय के विरुद्ध लड़ने के लिए अहिंसा का मार्ग सिखाया। उन्हें व्यक्तिगत स्वतंत्रता की धुन थी जो सत्य और आत्मानुभूति की उनकी सोच से निकटता से जुड़ी हुई थी। सत्य के लिए अपनी खोज उन्हें अपनी ही अंतरात्मा में गहरी पैठ में ले गई, फलतः उन्होंने अपने इर्द-गिर्द के स्वाभाविक और सामाजिक विश्व में, विशेषकर परम्परा का विश्लेषण किया, जिसे उन्होंने

→ अपना ही माना।

गाँधी जी का दर्शन आधुनिकता और उनकी बुराईयों से गहरा संघर्ष था। अत्यधिक औद्योगीकरण, भौतिकवाद, और स्वार्थी व्यवसायों की बुराईयों के विरुद्ध गाँधी जी ने बदले में - स्वदेशी, स्वयं और न्यासधारिता की प्रमुखता, व्यष्टिकृत शक्ति के रूप में राज्य संस्था का विरोध और लोकतंत्र की विद्यमान धारणा का सुझाव दिया। जहाँ केवल व्यक्ति गिने जाते है, उन्होंने स्वराज्य किस्म के लोकतंत्र का समर्थन किया जहाँ प्रत्येक वस्तु स्वतंत्र व्यक्ति से निकलती है और जहाँ निर्णय नीचे से ऊपर की ओर हो और शक्ति का स्थान नीचे हो। उन्होंने अल्पतम राज्य का प्रस्ताव किया, जो सहयोगशील शक्तियों में सम्पन्न हो, अपने आधार सहायता के रूप में स्वायत व्यक्तियों के रूप में। साथ विकेन्द्रीकरण का समर्थन करता हो।

आध्यात्मिक परिप्रेक्ष्य ने जीवन के प्रति गाँधी जी के समग्र दृष्टिकोण को अनुप्राणित किया। उनकी राजनीतिक सोच, और व्यवहार, अर्थव्यवस्था का सुझाव, सामाजिक संघटन और व्यावहारिक जीवन में उनके आधार नैतिकता और सदाचार है। सत्यता का मार्ग उनका यंत्र था और अहिंसा उनका अभिन्न अंग था।

गाँधी जी के महत्वपूर्ण रचनाओं में उल्लेखनीय है:- एन आटोबायोग्राफी (आत्मकथा), द स्टोरी ऑफ माई एक्सपेरीमेंट्स विद ट्रूथ (सत्य से मेरे प्रयोग की कथा), द कॉलेक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गाँधी (गाँधी वांगमय), पंचायती राज, दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह, सर्वोदय और हिन्द स्वराज्य, गाँधी जी ने यंग इंडिया का सम्पादन भी

भी किया, जिसे बाद में हरिजन नाम दिया गया, जो उनका मुखपत्र था।

गाँधी जी बहुतों से प्रभावित भी हुए:- टाल्सटाय (गोस्पल्स इन ब्रीफ, व्हाट टू डू, दी किंगडम ऑफ गॉड इज विदइन यू; रस्किन (अनटू दिस लास्ट), थोरियो (एस्से ऑन सिविल डिसओबिडेन्स) स्वामी विवेकानंद, गोखले और तिलक में कुछ अन्य व्यक्ति उल्लेखनीय है।

उनके परिवार और भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन पर इस प्रभाव की भी छाप है। वह विश्व के प्रमुख धर्मों की शिक्षाओं से भी परिचित थे। वह अपवादिक रूप में बहुपठित व्यक्ति थे और प्लेटो के रिपब्लिक जैसी कृतियों को गुजराती में अनुवाद किया वह अपने समय के श्रेष्ठतम व्यक्तियों से भी निरंतर पत्र व्यवहार करते रहते थे। वह विशाल भारतीय उपमहाद्वीप के विभिन्न भागों का विस्तृत यात्रा करते थे, कभी-कभी लम्बी पद यात्रा करते थे

<u>धर्म और राजनीति के बीच संबंध :-</u>

आधुनिक विश्व में राजनीतिक क्षेत्र से धर्म को अलग करने का प्रयास किया गया और धर्म को केवल व्यक्तिगत कार्य बनाया गया। उनके सामने धार्मिक आस्थाओं और वचनबद्धता से राजनीति क्षेत्र को मूर्त रूप नहीं दिया जाना चाहिए। ऐसी स्थिति के प्रति गाँधी जी ने सार्वजनिक जीवन निर्माण में धर्म के पुनर्निवेश का आह्वान किया और राजनीति के स्वास्थ्य तथा

⟶

→ तथा धार्मिक अनुपालन के बीच गहरा संबंध देखा।

धर्म की अवधारणा:- धर्म का क्या अर्थ होता है? धर्म की विविधता का अर्थ कोई कैसा मानता है? गाँधी जी का उत्तर था - "मैं विश्व के सभी महान धर्मों के आधारभूत सत्यता में विश्वास करता हूँ - आधार पर वे सब एक थे और सभी एक-दूसरे के लिए उपयोगी हैं।" उनके अनुसार जितने मत हैं; उतने ही अधिक धर्म हैं। प्रत्येक मत की दूसरे से भिन्न ईश्वर की अवधारणा अलग थी, फिर भी वे उसी ईश्वर को मानते हैं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि धर्म का आचरण से अंतर किया जाना चाहिए। आधारभूत नैतिक अवधारणाएँ सभी धर्मों में एक समान हैं। धर्म से मेरा अभिप्राय आचरण नहीं है, परंतु नामकरण से क्या फर्क पड़ता है।"

धर्म हमें सच्चाई और सदाचार के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करता है। कभी-कभी वह सामान्यतः धर्म और विशिष्ट अर्थ में धर्म के बीच अंतर करता है। एक विशिष्ट धर्म की अपनी आस्थाएँ और प्रथाएँ होती हैं। जब उसमें सुझाए गए मार्ग से कोई आगे बढ़ता है; वह सीमाओं से आगे बढ़ जाता है। और आम सूत्र की अनुभूति करता है जो सभी धर्मों और सच्चाई के अनुयायियों को बाँधता है। एक बार गाँधी जी ने कहा था " आइए, मैं स्पष्ट करता हूँ, धर्म से मेरा क्या अभिप्राय है। यह हिन्दू धर्म नहीं है, जिसे मैं निःसंदेह सभी धर्मों के ऊपर मानता हूँ; परंतु जो धर्म हिन्दुत्व से श्रेष्ठ होता है, जो किसी के स्वभाव को परिवर्तन करता है; जो किसी को सुनिश्चित रूप से अंदर की ऐसी सच्चाई को बाँधता है; जो भी शुद्धीकरण करता है।